आजादी का अमृत महोत्सव

के अवसर पर

सिद्धार्थ विश्विद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर

में

आयोजित कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

2022

प्रेस की आजादी दिवस के अवसर पर दिनांक 3/05/2022 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मीडिया संचार का साधन और परिवर्तन का वाहक भी

कपिलवस्तु (एसएनबी)। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर में राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वाधान में आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत देश की आजादी दिवस के अवसर पर आयोजित भारतीय मीडिया एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषय पर आनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए इंडियन एक्सप्रेस के सहायक संपादक हरिकिशन शर्मा ने कहा की मीडिया की दशा और दिशा को लेकर गंभीर चिंतन मनन की आवश्यकता है। मीडिया संचार का साधन है और परिवर्तन का वाहक भी है। प्रेस की स्वतंत्रता से सीधा संबंध तथ्यपरक रिपोर्ट जो सच को ढूंढने और उसे लोगों को बताने तथा अपने काम में उसे आधार बनाने के उद्देश्य से निहित है। कोविड काल में भारत में पत्रकारों एवं मीडिया कर्मियों ने अदम्य साहस का परिचय दिया है। समाज की सुरक्षा और महामारी से बचाव में प्रेस की भूमिका अनुकरणीय रही है। प्रेस की स्वतंत्रता के क्रम में स्वतंत्र बहुलतावादी और मुक्त प्रेस की स्थापना महत्वपूर्ण है, लेकिन हाल के वर्षो में पत्रकारों और पत्रकारिता जगत के ऊपर जिस प्रकार से शारीरिक हमलों के साथ-साथ डिजिटल मीडिएट सर्विलांस हमले बढ़े हैं, वह पत्रकारिता समाज के समक्ष एक बड़ी चुनौती है।वर्तमान परिश्य में सोशल मीडिया में सेल्फ एडिट करने का गुण को बढ़ाने की परम आवश्यकता है। समय-समय पर लोकसभा में और विभिन्न प्लेटफार्म पर इसको लेकर चिंता व्यक्त की गई है। वहीं भारत के पड़ोसी देश चीन में मीडिया की स्वतंत्रता अत्यंत ही सीमित है। मीडिया और समाज दोनों को संवेदनशील और संयमित व्यवहार एवं आचरण के द्वारा भारत को एकता

आनलाइन संगोष्ठी

और अखंडता के साथ आगे बढ़ाने में अपनी महती उपयोगिता का निर्वहन के प्रति सतत प्रयत्नशील होना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य एवं सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी डा. महेंद्र सिंह ने कहा कि आज संपूर्ण समाज ट्रांजिशन के फेस से गुजर रहा है। लोकतंत्र की गुणवत्ता और मीडिया की गुणवत्ता एक-दूसरे के पर्याय हैं। लोकतांत्रिक मूल्यों को सजाने में मीडिया एवं पत्रकारिता की भूमिका हमेशा से अहम रही है। समाज के वंचित निर्धन गरीब और मुख्यधारा से दूर लोगों की आवाज बन कर मीडिया सामाजिक समरसता का प्रमुख स्तंभ की भूमिका में है। आज मीडिया जिस प्रकार से न्यायिक प्रक्रिया को भी प्रभावित कर रही है, वह अत्यंत चिंतनीय है। कार्यक्रम संयोजक अविनाश प्रताप सिंह ने बताया की प्रेस की आजादी का उद्देश्य ही मुक्त स्वतंत्र और बहुलवादी प्रेस के विकास का प्रयास था। भारत में प्रेस की स्वतंत्रता का मूलाधार भारतीय संविधान के अंतर्गत मौलिक अधिकार में उल्लिखित स्वतंत्रता के अधिकार के अंतर्गत वाक एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के माध्यम से प्राप्त होता है। भारतीय संविधान में विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ उस पर लगाम भी लगाई गई है। वर्तमान समय में अधिकांश मीडिया निजी हाथों में है और बड़ी कंपनियों द्वारा नियंत्रित हो रही हैं। इसलिए मीडिया का व्यवसायिक दृष्टि बढ़ा है। कार्यक्रम में आभार ज्ञापन डा. सरिता सिंह ने किया। इस अवसर पर डा. नीता यादव, डा. सुनीता त्रिपाठी, डा. रेनू त्रिपाठी, डाक्टर हृदय कांत पांडेय, डा. अरविंद रावत, डाक्टर प्रदीप पांडेय, डाक्टर विमल वर्मा, डा. जय सिंह यादव, डाक्टर आभा दिवेदी, डा. धर्मेंद्र, डाक्टर मयंक कुशवाहा, डा. आशीष लाल, डा. शरदेन्दु त्रिपाठी, डा. रविकांत, डा. नीरज, डा. आदित्य प्रताप सिंह, डा. राहुल सिंह, डा. अंबुज मिश्रा, डा. भावना सिन्हा, डा. मनोज भारतीय, डा. दीपक सिंह, डा. शैलेंद्र त्रिपाठी, डा. सुधीर शुक्ला, सहित सिद्धार्थ विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थी तथा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं उससे संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी जुड़े रहे।

मीडिया की दशा व दिशा को लेकर गंभीर चिंतन की जरूरत

सिद्धार्थनगर, निज संवाददाता। मीडिया की दशा और दिशा को लेकर गंभीर चिंतन मनन की जरूरत है। कोविड काल में भारत में पत्रकारों व मीडिया कर्मियों ने अदम्य साहस का परिचय दिया है। ये बातें वरिष्ठ पत्रकार हरिकिशन शर्मा ने मंगलवार को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के तहत भारतीय मीडिया एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषय पर आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी में कहीं।

सिद्धार्थ विवि में मंगलवार को ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें आमंत्रित अतिथियों ने अपने विचार रखे। • हिन्दुस्तान

उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में पत्रकारों और पत्रकारिता जगत पर जिस प्रकार से शारीरिक हमलों के साथ-साथ डिजिटल मीडिएट सर्विलांस हमले बढ़े हैं वह पत्रकारिता समाज के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। पत्रकारों के फोन टैपिंग और हैक की घटनाएं भी आज बढ़ी है। अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने कहा कि मीडिया और समाज दोनों को संवेदनशील और संयमित व्यवहार व आचरण के द्वारा भारत को एकता और अखंडता के साथ आगे बढ़ाने में अपनी महती उपयोगिता का निर्वहन के प्रति सतत प्रयत्नशील होना अत्यंत जरूरी है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य एवं सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि लोकतांत्रिक मूल्यों को सजाने में मीडिया एवं पत्रकारिता की भूमिका हमेशा से अहम रही है। समाज के वंचित निर्धन गरीब और मुख्यधारा से दूर लोगों की आवाज बन कर मीडिया सामाजिक समरसता का प्रमुख स्तंभ की भूमिका में है। सोशल मीडिया ने मीडिया की स्वतंत्रता को अवश्य ही मजबूत किया है लेकिन इसके साथ-साथ उन्होंने चुनौती भी उत्पन्न की है। इसलिए कुशल प्रबंधन से सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोका जा सकता है। इस अवसर पर डॉ. सरिता सिंह, अविनाश प्रताप सिंह, डॉ. नीता यादव, डॉ. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. रेनु त्रिपाठी, डॉ. हृदय कांत पांडेय, डॉ. अरविंद रावत, डॉ. प्रदीप पांडेय, डॉ. विमल वर्मा आदि मौजूद थे।

लोकतंत्र और मीडिया एक-दूसरे के पर्याय

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग ने आयोजित की वर्चुअल संगोष्ठी

जागरण संवाददाता, सिद्धार्थनगर : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के डा. महेंद्र सिंह ने कहा कि लोकतंत्र और मीडिया एक-दूसरे के पर्याय है। लोकतांत्रिक मूल्यों को सजाने में मीडिया एवं पत्रकारिता की भूमिका हमेशा से अहम रही है। वंचित निर्धन गरीब और मुख्यधारा से दूर लोगों की आवाज बन कर मीडिया सामाजिक समरसता का प्रमुख स्तंभ की भूमिका में है। वर्तमान समाज सूचना का संसार है। इंटरनेट मीडिया ने इसकी स्वतंत्रता को मजबूत किया है। पारंपरिक मीडिया की भूमिका से नकारा नहीं जा सकता।

उन्होंने यह बातें सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से अमृत महोत्सव में भारतीय मीडिया एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषय पर आयोजित वर्चुअल संगोष्ठी में कही। वरिष्ठ पत्रकार हरिकिशन शर्मा ने कहा कि स्वतंत्र पत्रकारिता स्वस्थ लोकतंत्र की सूचक है, जैसे स्वस्थ लोकतंत्र स्वच्छ पत्रकारिता के लिए अपरिहार्य है। राष्ट्र की अखंडता और एकता के लिए फेक न्यूज खतरा है। मीडिया की दशा और दिशा को लेकर गंभीर चिंतन मनन की आवश्यकता है। कोविड काल में पत्रकारों ने अदम्य साहस का परिचय दिया है। कार्यक्रम संयोजक डा. अविनाश प्रताप सिंह ने कहा प्रेस की आजादी का उद्देश्य ही मुक्त स्वतंत्र और बहुलवादी प्रेस के विकास का प्रवास है। अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने अध्यक्षता की। डा. सरिता सिंह, डा. नीता यादव, डा. सुनीता त्रिपाठी, डा. रेनू त्रिपाठी, डा. हदयकांत पांडेय, डा. अरविंद रावत, डा. प्रदीप पांडेय, डा. विमल वर्मा, डा. जयसिंह यादव, डा. आभा द्विवेदी, डा. धर्मेंद्र, डा. मयंक कुशवाहा, डा. आशीष लाल, डा. शरदेंदु त्रिपाठी, डा. रविकांत, डा. नीरज, डा. आदित्य प्रताप सिंह, डा. राहुल सिंह, डा. अंबुज मिश्रा, डा. भावना सिन्हा, डा. मनोज भारतीय, डा. दीपक सिंह, डा. शैलेंद्र त्रिपाठी, डा. सुधीर शुक्ला आदि मौजूद रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में आयोजित वर्चुअल संगोष्ठी में मौजूद वक्ता ●सौ. विधि प्रकाशन

मिश्रा, लिया। इस दौरान संस्कृत विभाग की विरुद्ध शस्त्र उठाकर धर्म की अभिषेक रस्तोगी आदि विद्यार्थियों ने उपस्

चुनौतीपूर्ण हो गई है पत्रकारिता

सिद्धार्थ विवि में ऑनलाइन संगोष्ठी में बोले वक्ता

संवाद न्यूज एजेंसी

सिद्धार्थनगर। वरिष्ठ पत्रकार हरिकिशन शर्मा ने कहा कि मीडिया की दशा और दिशा को लेकर गंभीर चिंतन मनन की आवश्यकता है। मीडिया संचार का साधन है और परिवर्तन का वाहक भी। प्रेस की स्वतंत्रता से सीधा संबंध तथ्यपरक रिपोर्ट से है, जो सच को ढूंढने और उसे लोगों को बताने तथा अपने काम में उसे आधार बनाने के उद्देश्य से निहित है। कोविड काल में देश में पत्रकारों ने अदम्य साहस का परिचय दिया है। समाज की सुरक्षा और महामारी से बचाव में प्रेस की भूमिका अनुकरणीय रही है।

वह सिद्धार्थ विवि कपिलवस्तु के राजनीति विज्ञान विभाग में आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत मंगलवार को आयोजित भारतीय मीडिया एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी में विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पत्रकारों और पत्रकारिता जगत के ऊपर जिस प्रकार से हमले बढ़े हैं, यह पत्रकारिता समाज के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। पत्रकारों के फोन टेप करने और हैक की घटनाएं भी बढ़ी हैं। संचार माध्यम से आज समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रकाशक की भूमिका में आ गया है। अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता का अभिप्राय केवल एक व्यक्ति की स्वतंत्रता से नहीं, बल्कि समूह समाज और देश के उत्थान में निहित है। डीडीयू के राजनीति विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य एवं सूचना व जनसंपर्क अधिकारी डॉ. महेंद्र सिंह ने कहा कि भारतीय मीडिया सामाजिक परिवर्तन की शक्ति के रूप में उभर रही है।

कार्यालय : मुख्य चिकित्साधिकारी, जनपद-महराजगंज

महर्षि परशुराम जयंती (3/5/22)के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के मध्य परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन।

परशुराम
कार्यक्रमस्य -

दिनांक 9/5/22 को महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर अनलाइन शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को उनके जीवन से सम्बन्धित महान एवं प्रेरक कथाओं से अवगत कराया गया।

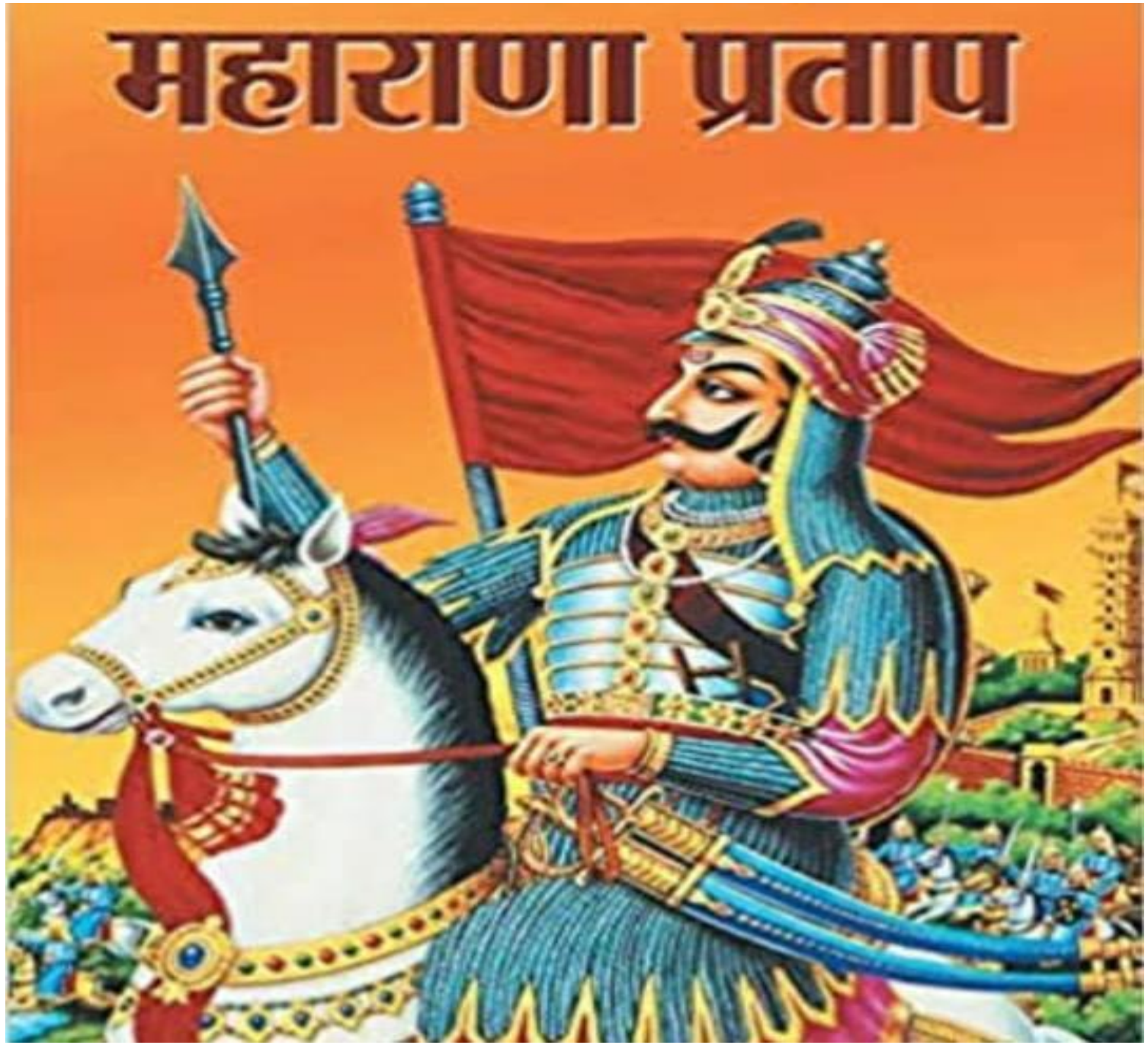
महाराणा प्रताप

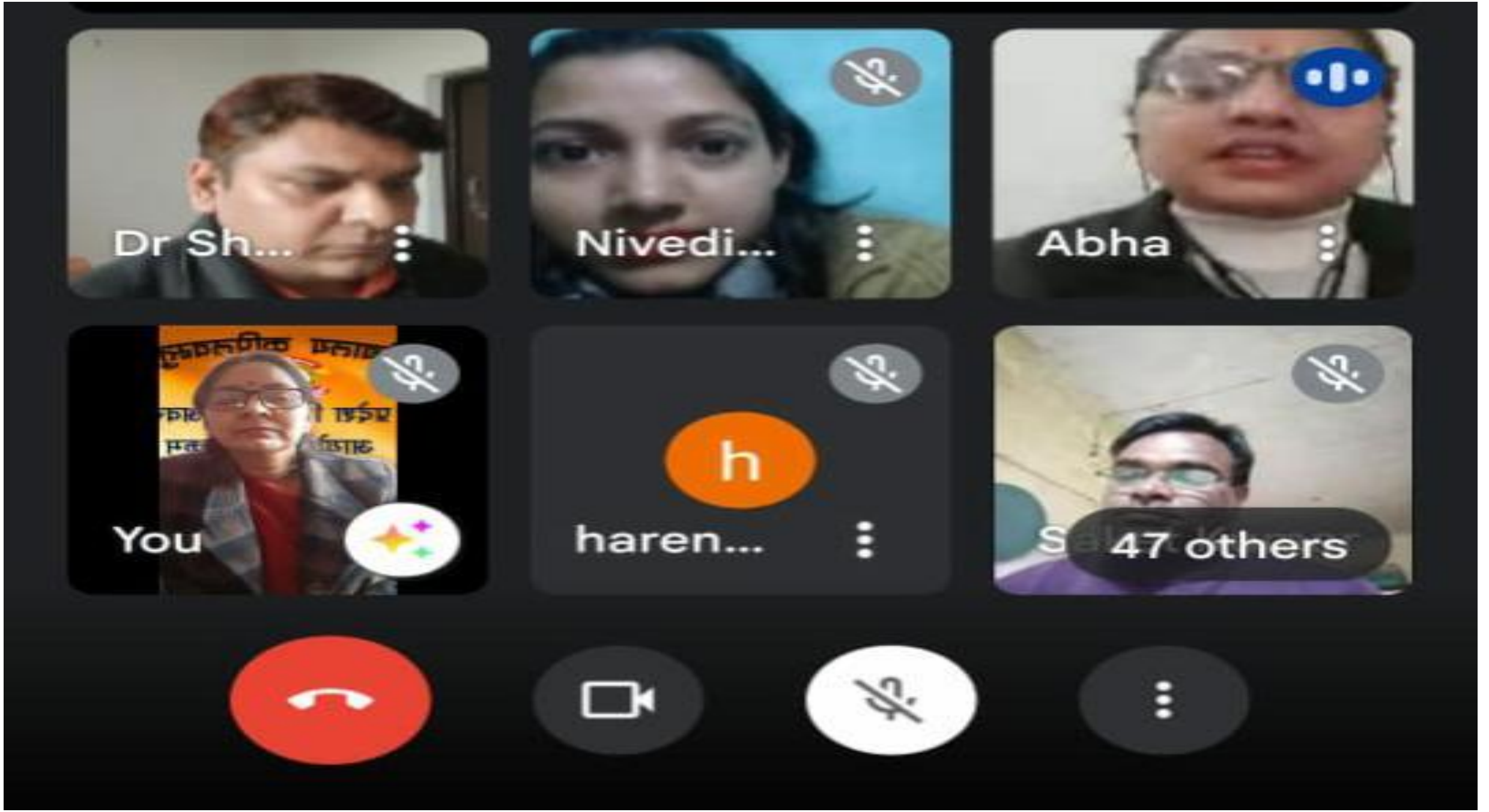
Dr Sh...
Nivedi...
Abha
You
h
haren...
47 others

दिनांक- 10/05/2022

1857 के महान विद्रोह में शहीद देशभक्तों को श्रद्धांजलि देते हुए सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों के महान गाथा के बारे में व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

1857 का संग्राम देश की आजादी का महत्वपूर्ण क्षण

- सिविवि में हुई प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बलिदान दिवस पर संगोष्ठी
- इतिहास के अनछुए पहलुओं पर हुई विस्तृत चर्चा

जागरण संवाददाता, सिद्धार्थनगर : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग ने वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संग्राम को देश की आजादी का सबसे महत्वपूर्ण क्षण बताया। भारतीय इतिहास के अनछुए पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। दो मिनट का मौन रख नमन किया। इनके बताए आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

प्राचीन इतिहास की विभागाध्यक्ष डा. नीता यादव ने कहा कि अंग्रेजों की हड़प नीति व सहायक संधि को समझने की आवश्यकता था, लेकिन उनके दुर्भाव को देर से समझ सके। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ने आजादी की अलख जलाई थी। यह आजादी का महत्वपूर्ण क्षण रहा। अध्यक्ष लोक प्रशासन विभाग डा. सुनीता त्रिपाठी ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम को प्रथम सिपाही व जन विद्रोह के रूप में स्वीकार किया जाता है। अध्यक्ष इतिहास विभाग डा. सच्चिदानंद चौबे ने कहा आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जाना केवल प्रासंगिक नहीं है बल्कि यह उस समय की दशा व हालात से अवगत कराता है। राष्ट्र हित की रक्षा व उत्थान पर विचार किया जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए। पलासी का युद्ध भारतीय इतिहास को बदलने का काम किया था, लेकिन प्रथम जन संग्राम और एक राष्ट्र निर्माण के रूप में परिणति करने का काम किया।

अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने कहा आजादी के अमृत महोत्सव में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानियों को नमन करने का अवसर है। छात्रों को इतिहास को समझने व जानने की आवश्यकता है। जीवन में धैर्य और संयम का संतुलन बनाए रखना चाहिए, जिससे हम किसी भी समस्या से निजात पा सकते हैं। अंग्रेज अधिकारी जितना भी प्रताड़ना वीर जवानों करते थे, वह उन्हें हंसते हंसते स्वीकार कर लेते थे। संचालन इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डा. यशवंत यादव ने किया। डा. हृदयकांत पांडेय, डा. अविनाश प्रताप सिंह, डा. धर्मेंद्र कुमार, डा. हरेंद्र कुमार शर्मा, डा. अमित कुमार साहनी आदि मौजूद रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय सभागार में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम विषय पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते प्रो हरीश कुमार शर्मा ● जागरण

यह और अन्य खबरें देखें–

https://www.jagran.com/local/uttar-pradesh_gorakhpur-city-news-hindi.html

सिद्धार्थ विवि कपिलवस्तु में मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि व उपस्थित शिक्षक, छात्र-छात्राएं । ● हिन्दुस्तान

सिद्धार्थ विवि में शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

सिद्धार्थनगर, निज संवाददाता। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के इतिहास विभाग की ओर से 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के उपलक्ष्य में मंगलवार को शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस मौके पर छात्र-छात्राओं ने शहीदों के स्मरण में अपने विचार रखे। अध्यक्ष इतिहास विभाग व समन्वयक, दीन दयाल उपाध्याय, शोधपीठ डॉ. सच्चिदानन्द चौबे ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जाना केवल इस कारण से ही प्रासंगिक नहीं कि यह उस समय की दशा व हालात से अवगत कराता है बल्कि आज ... हित की रक्षा व उत्थान पर विचार

बचाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरोवर अभियान शुरू करके अवसर पर खंड विकास अधिकारी गिरीश त्रिपाठी आदि मौजूद रहे। व जिलाधिकारी ने बृहद जांच कर जाति में

स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों का हृदय से करें सम्मान

महि

संवाद न्

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के इतिहास विभाग में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की याद में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में छात्र, छात्राओं ने कहा कि ब्रिटिश हुकूमत के अत्याचार को याद रखते हुए 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों का हृदय से सम्मान करना चाहिए।

प्राचीन इतिहास विभाग की अध्यक्ष डॉ. नीता यादव ने कहा कि हमें अंग्रेजों की हड़प नीति एवं सहायक संधि को भली भांति समझने की जरूरत थी, लेकिन हम उनके दुर्भाव को देर से समझ सके।

सिद्धार्थ विश्वविधालय में शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में मंचासीन शिक्षक। इस मौके पर मौजूद विद्यार्थी। संवाद

कार्यक्रम में लोक प्रशासन विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. सच्चिदानंद चौबे, प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने कहा कि हमें सदैव उन वीर जवानों को नमन करते हुए उन्हें याद करते रहना चाहिए। संवाद

बस्ती।
करनपुर
घरातियों
समय घम
बराती द्वार
ऊपर टॉप
हंसी-
अफरातफ
सूचना
कप्तानगंज
पर पहुंच
काफी देर
किया जा

पीएम मोदी के लुंबिनी में

कार्यालय अध्यक्ष एवं प्रशासक,
ग्रेटर शारदा सहायक समादेश क्षेत्र विकास प्राधिकारी / परियोजना

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में मना आजादी का अमृत महोत्सव

यूथ इण्डिया संवाददाता

सिद्धार्थनगर। आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में मंगलवार को सिद्धार्थ विश्वविधालय कपिलवस्तु सिद्धार्थ नगर के इतिहास विभाग द्वारा द्वारा 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के उपलक्ष्य में शहीदों की अमरगाथा एवं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पण करने हेतु एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्र, छात्राओं द्वारा प्रतिभाग करते हुए शहीदों के स्मरण में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा गया कि हमें उस समय के ब्रिटिश सरकार के अत्याचार को सदैव याद रखते हुए 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों के प्रति हृदय में स्थान बनाए रखना चाहिए। कार्यक्रम में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ नीता यादव, अध्यक्ष प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग द्वारा कहा गया कि हमें अंग्रेजों की हड़प नीति एवं सहायक सन्धि को भली भांति समझने की जरूरत थी लेकिन हम उनके दुर्भाव को देर से समझ सके,। डॉ सुनीता त्रिपाठी अध्यक्ष लोक प्रशासन विभाग एवं सह अधिष्ठाता कला संकाय ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम को प्रथम सिपाही विद्रोह एवं जन विद्रोह के रूप में स्वीकार करते हुऐ इस पर प्रकाश डाला।

आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष के अंतर्गत

विश्व परिवार दिवस के अवसर पर

ऑनलाइन संगोष्ठी:

दिनांक:-15 मई 2022, समय-11:00 से 12:00

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विषय: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिवार

संरक्षक:

प्रोफेसर हरि बहादुर श्रीवास्तव
कुलपति
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय,कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

मुख्य वक्ता:

प्रो. मनीष कुमार वर्मा
आचार्य, समाजशास्त्र विभाग,
बाबा साहब अम्बेडकर (केंद्रीय)
विश्वविद्यालय, लखनऊ

कार्यक्रम अध्यक्ष:

प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा
अधिष्ठाता कला संकाय
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर

विशिष्ट वक्ता:

प्रो. रुचि जी. दस्तीदार
आचार्य, समाजशास्त्र विभाग,
बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल,

आयोजन सचिव:

डॉ. मयंक कुशवाहा
समाजशास्त्र विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय,कपिलवस्तु,

कार्यक्रम संयोजक:

डॉ. प्रदीप कुमार पांडेय
समाजशास्त्र विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

आयोजक

समाजशास्त्र विभाग

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,सिद्धार्थ नगर

सामाजिक एकता और समरसता के लिए परिवार महत्वपूर्ण : प्रो. मनीष

जासं, सिद्धार्थनगर : बाबा साहब भीमराव आंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ में समाजशास्त्र विभाग के प्रो. मनीष कुमार वर्मा ने रविवार को वर्चुअल संगोष्ठी में कहा कि भारतीय समाज व्यवस्था में परिवार प्रमुख स्तंभ है। सामाजिक एकता और समरसता के ताना-बाना में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने यह बातें सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग की ओर से अमृत महोत्सव में विश्व परिवार दिवस पर आयोजित आनलाइन संगोष्ठी में कही।

परिवार में एक दूसरे की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए : प्रो. मनीष

विश्व परिवार दिवस पर सिविवि में किया गया ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन

सिद्धार्थनगर (एसएनबी)। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत विश्व परिवार दिवस के अवसर पर समाजशास्त्र विभाग तत्वावधान में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिवार विषय पर आनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता के रूप में बाबा साहब भीम राव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ के समाजशास्त्र विभाग के प्रोफेसर मनीष कुमार वर्मा ने कहा कि भारतीय समाज व्यवस्था में परिवार प्रमुख स्तंभ है । सामाजिक एकता और समरसता के ताने-बाने में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है । परिवार संरचनात्मक, प्रक्रियात्मक एवं प्रकार्यात्मक रूप से उद्विकास की अवस्था से लेकर समकालीन अवस्था तक परिवार की भूमिका है। भारतीय समाज मे परिवार उत्प्रेरक की भूमिका में है।

आनलाइन संगोष्ठी को संबोधित करते वक्ता। फोटो : एसएनबी

प्रो. वर्मा ने कहा कि आज परिवार अति भारी विद्युत परिपथ की तरह हो गया है । जिसमें सहायता नामक तत्व उत्प्रेरक की भूमिका अदा करता है अतः परिवार के सभी सदस्यों को एक दूसरे की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए और यही हम सबके लिए विश्व परिवार दिवस की प्रासंगिकता को भी इंगित करता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कला संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर हरीश कुमार शर्मा ने वर्तमान परिदृश्य में परिवार की संरचना, उनमें परिवर्तन एवं परिवार की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी संसति के मूल में परिवार का अस्तित्व प्रमुख रूप से विद्यमान है। विशिष्ट वक्ता के रूप में बरकतुउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल की सामाजिक विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता एवं समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर रुचि घोष दस्तीदार ने कोविड काल एवं उसके पश्चात परिवार की प्रकार्यात्मक महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि कोविड के समय में सम्पूर्ण मानव समाज ने परिवार की महत्ता तथा उपयोगिता को बहुत नजदीक से महसूस किया। प्रोफेसर रुचि ने परिवार में महिलाओं की भूमिका को बताते हुए कहा कि भारतीय नारी की व्यक्तिवादिता, पुरुष और नारी से मिलकर समाज का निर्माण करते हैं और परिवार उसका मुख्य आधार है। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम के सयोजक डा. प्रदीप कुमार पांडेय तथा आभार ज्ञापन डा. मयंक कुशवाहा ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक डा. सत्येंद्र दुबे, डा. सुनीता त्रिपाठी, डा. नीता यादव, डा. सच्चिदानंद चौबे, डा. रेनू त्रिपाठी, डा. अविनाश प्रताप सिंह, डक्टर हृदय कांत पांडे, डा. धर्मेंद्र कुमार, डा.शरदेन्दु त्रिपाठी, डा. अरविंद रावत एवं जनसम्पर्क अधिकारी अविनाश प्रताप सिंह उपस्थित रहे।

बेहतर समाज निर्माण में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण

सिद्धार्थ विवि में हुई ऑनलाइन संगोष्ठी में बोले समाजशास्त्री

सिद्धार्थनगर। भारतीय समाज व्यवस्था में परिवार प्रमुख स्तंभ है। सामाजिक एकता और समरसता के ताने-बाने में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज में परिवार उत्प्रेरक की भूमिका में है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में आजादी के अमृत महोत्सव वर्ग के अंतर्गत विश्व परिवार दिवस पर समाजशास्त्र विभाग के तत्वावधान में रविवार को आयोजित वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिवार विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी में बाबा साहब भीम राव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ के समाजशास्त्र विभाग में प्रो. मनीष कुमार वर्मा ने ये बातें कहीं।

प्रो. वर्मा ने कहा कि आज परिवार विद्युत परिपथ की तरह हो गया है, जिसमें सहायता नामक तत्व उत्प्रेरक की भूमिका अदा करता है। परिवार के सभी सदस्यों को एक-दूसरे की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए और यही विश्व परिवार दिवस की प्रासंगिकता भी है। भारत में परिवार के संस्थागत ढांचे के कारण ही विविधतापूर्ण समाज की चुनौतियों से जूझने में हम सक्षम हैं।

कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने कहा कि हमारी संस्कृति के मूल में परिवार विद्यमान है। आधुनिक समय में परिवार की

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर दिनांक 16/5/22 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केन्द्र द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

जनपद में विविध कार्यक्रमों के बीच मनी बुद्ध पूर्णिमा, लोगों ने भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया

बुद्ध के विचारों को अपनाने का संकल्प लिया

बुद्ध पूर्णिमा

सिद्धार्थनगर, हिन्दुस्तान टीम। बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, राजकीय बौद्ध संग्रहालय पिपरहवा समेत जगह-जगह विविध कार्यक्रम हुए। इस दौरान जहां बुद्ध की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया गया वहीं भगवान बुद्ध के विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया गया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में अंतरराष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केंद्र की ओर से बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा कि विश्वविद्यालय का बोध वाक्य अत्त दीपो भव भी इसी ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता रहता है। विद्यार्थियों को अपनी पूरी क्षमता के साथ आत्मज्ञान को परिष्कृत करते हुए उज्ज्वल जीवन की कामना के साथ भारत की यशस्वी ज्ञान परंपरा को आत्मसात करते रहना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केंद्र के विशेष कार्य अधिकारी प्रो. सुजीत त्रिपाठी ने कहा कि महात्मा गौतम बुद्ध सामाजिक जागरण के प्रभावी संत थे। वित्त अधिकारी अजय सोनकर ने कहा कि मानव समाज के कल्याण के लिए अष्टांग मार्ग पर चलते रहना बौद्ध धर्म दर्शन का मुख्य चिंतन धारा है। बौद्ध धर्म दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। कार्यक्रम में डॉ. सत्येंद्र दुबे, डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह, डॉ. जय सिंह यादव, डॉ. विमल वर्मा, डॉ. सुनील त्रिपाठी, डॉ. आशीष श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

बुद्ध विषयक छायाचित्र प्रदर्शनी: राजकीय बौद्ध संग्रहालय पिपरहवा में संग्रह कक्ष में बुद्ध विषयक छायाचित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं धम्म चक्र प्रवर्तन, अभयदान दान का समय, महापरिनिर्वाण, उपदेश देते हुए, भूमि स्पर्श मुद्रा, ध्यानस्थ मुद्रा आदि का प्रदर्शन है। प्रदर्शनी के माध्यम से जन सामान्य को संग्रहालय की प्रमुख विशेषताओं एवं कलाकृतियों के विषय में अत्यंत सहज रूप से जानकारी प्राप्त हो रही है।

प्रदर्शनी 20 मई तक दर्शकों के लिए खुली रहेगी। इस अवसर पर संग्रहालय अध्यक्ष डॉ. तृप्ति राय, सुनील चौधरी, प्रमोद, जितेंद्र पांडेय, धर्मेंद्र चौधरी, धीरेंद्र शुक्ला, विनय सहोली, कैलाश सहानी, प्रदीप चौधरी, हरेंद्र चौधरी, अरमान कुरैश, सोनू अहमद, श्याम बिहारी गुप्ता, अमीन खान, मोहम्मद आसिफ, अब्दुल वाहिद आदि मौजूद रहे।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव।

राजकीय बौद्ध संग्रहालय में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन करते धम्म प्रिय। • हिन्दुस्तान

अनुयायियों को अनुसरण करना चाहिए

डुमरियागंज। बुद्ध पूर्णिमा बौद्ध धर्म में आस्था रखने वालों का एक प्रमुख पर्व है। बौद्ध अनुयायियों को इनका अनुसरण करने सच्चे मार्ग पर चला जा सकता है। ये बातें मनोज सिद्धार्थ ने कस्बे में आयोजित कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि आज के परिवेश में भगवान बुद्ध के अहिंसा, करुणा, मैत्री जैसे संदेश के पथ पर चलकर आतंकवाद जैसे भयंकर राक्षस से निपटा जा सकता है। इस अवसर पर राम नरेश, राम महेश, मुरारी, विक्रम कुमार, आदर्श सिद्धार्थ, उमेश सिद्धार्थ, अमित सिद्धार्थ, राजन लाल, संतोष गौतम, सत्तू गौतम, राम पाल, श्रीनाथ, छितापति, सुखवती, ललिता गौतम, अंगद पासवान, रंजीत पासवान आदि मौजूद रहे।

भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर हुआ माल्यार्पण

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर शहर के बड़ी तिराहा स्थित भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया गया। इस मौके पर सदर विधायक श्यामधनी राही, पूर्व विधायक राघवेंद्र प्रताप सिंह, चेयरमैन गोविंद माधव, विहारी जायसवाल, शांति जायसवाल, विकास पांडेय, विनय लोधी, महेंद्र लोधी, आनंद मिश्र आदि मौजूद रहे।

क्षमतावान को कमजोर की सहायता निरंतर करनी चाहिए : कुलपति

बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में किया गया गोष्ठी का आयोजन

भारत की ज्ञान परंपरा उन्नत समाज की थाती है : वित्त अधिकारी

महात्मा गौतम बुद्ध सामाजिक जागरण के प्रभावी सन्त थे : प्रो. सुशील तिवारी

सिद्धार्थनगर/कपिलवस्तु (एसएनबी)। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में बुद्ध पूर्णिमा के उत्सव के अवसर पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रोफ्रेसर हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा कि भारत की यशस्वी ज्ञान परंपरा और समृद्धि संस्कृति में वैज्ञानिकता का व्यापक समावेश है।

उन्होंने कहा कि पूर्णिमा का दिन इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है। स्वयं भगवान बुद्ध को आज ही के दिन बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। यह पूर्णिमा के दिन का ही फल और प्रताप है। अपने ऊपर विश्वास में ही समस्त मानव का कल्याण निहित है। आत्म अनुभूति और उस अनुरूप अपने व्यवहार का संयमित कार्य संचालन तथा चिंतन मनन व्यक्ति के स्वयं के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति के जीवन के उन्नति प्रमुख आधार आत्म चेतना ही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का बोध वाक्य अत्त दीपो भव भी हमें इसी ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता रहता है। विद्यार्थियों को अपनी पूरी क्षमता के साथ आत्मज्ञान को परिष्त करते हुए उज्जवल जीवन की कामना के साथ भारत की यशस्वी ज्ञान परंपरा को आत्मसात करते रहना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को जब आत्मज्ञान प्राप्त होगा तभी समस्त सृष्टि के उत्कृष्ट उत्थान होगा। ज्ञानी और बड़ा व्यक्ति हमेशा दूसरे की प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता को निहित मानता है। इसलिए क्षमतावान व्यक्तियों को कमजोर लोगों की निरंतर सहायता करनी चाहिए। व्यक्ति को हमेशा देने की प्रवृत्ति में रहना चाहिए। भारतीय समाज एवं प्रवृत्ति का यही रीढ़ है। इससे पूर्व कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केंद्र के विशेष कार्य अधिकारी एवं कार्यक्रम के संयोजक प्रो. सुशील तिवारी ने कहा कि महात्मा गौतम बुद्ध सामाजिक जागरण के प्रभावी सन्त थे। उन्होंने अपने उपदेशों के माध्यम से व्यक्ति में चेतना जागृत करने का अनवरत यज्ञ किया। आत्म विश्वास ही मानव कल्याण का आधार है। बौद्ध धर्म दर्शन जीवन में यथार्थ की अनुभूति और उस अनुरूप अपना व्यवहार नियंत्रित करने की प्रेरणा देने वाला दर्शन है। यही आत्म चेतना और आत्मज्ञान के माध्यम से मानव कल्याण और समाज कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने का जो परम्परा महात्मा गौतम बुद्ध ने निर्धारित किया था आज भी भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में प्रचलित है। बौद्ध दर्शन ने उच्चतम मानव सेवा की परिकल्पना को साकार किया है। दृष्टिकोण की पवित्रता ही व्यक्ति को उत्तम कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। समय के अनुरूप अपनी परंपरा को और परिष्त करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। क्रोध से बचने की क्षमता का विकास भी निरंतर करते रहना चाहिए। वित्त अधिकारी अजय सोनकर ने कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा उन्नत समाज की थाती है । उसी उत्कृष्ट श्रृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी महात्मा गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म दर्शन के रूप में हम जानते हैं। त्याग और तपस्या के द्वारा ज्ञान अर्जन करना और उस अर्जित ज्ञान के माध्यम से मानव समाज के कल्याण के लिए अखंड यात्रा पर चलते रहना बौद्ध धर्म दर्शन का मुख्य चिंतन धारा है। बौद्ध धर्म दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. हरिबहादुर श्रीवास्तव, उपस्थित शिक्षक। फोटो : एसएनबी

कार्यक्रम में स्वागत उदबोधन डा. सत्येंद्र दुबे तथा आभार ज्ञापन डा. अविनाश प्रताप सिंह ने किया। कार्यक्रम का संचालन डाक्टर जय सिंह यादव ने किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति साकेत कुमार मिश्र, निवेदिता श्रीवास्तव एवं आशीष दुबे ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की डा. विमल वर्मा, डा. सुनीता त्रिपाठी, डा. प्रज्ञेस नाथ त्रिपाठी, डाक्टर संतोष कुमार सिंह, डा. सच्चिदानंद चौबे, डा. रविकांत शुक्ला, डाक्टर यशवंत यादव, डाक्टर नीरज कुमार सिंह, डाक्टर सरिता सिंह, डाक्टर धर्मेंद्र कुमार डाक्टर मयंक कुशवाहा, डा. विनीता रावत, डा. अमरजीत यादव, डा. आजाद कुमार, डा. आशीष श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

उन्नति का प्रमुख आधार है आत्मचेतना

बुद्ध पूर्णिमा पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में आयोजित गोष्ठी में बोले प्रोफ़ेसर हरि बहादुर श्रीवास्तव

संवाद न्यूज एजेंसी

सिद्धार्थनगर। अपने ऊपर विश्वास में ही समस्त मानव का कल्याण निहित है। आत्म अनुभूति और उस अनुरूप अपने व्यवहार का संयमित कार्य संचालन तथा चिंतन-मनन व्यक्ति के स्वयं के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति के जीवन की उन्नति का प्रमुख आधार आत्म चेतना ही है। ये बातें कुलपति प्रोफेसर हरिबहादुर श्रीवास्तव ने सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में अंतरराष्ट्रीय बौद्ध अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में बुद्ध पूर्णिमा पर आयोजित गोष्ठी में कहीं।

कुलपति प्रोफ़ेसर हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा कि भारत की यशस्वी ज्ञान परंपरा और समृद्धि संस्कृति में वैज्ञानिकता का व्यापक समावेश है। पूर्णिमा का दिन इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है। स्वयं भगवान बुद्ध को आज ही के दिन बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। यह पूर्णिमा का ही फल और प्रताप है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का बोध वाक्य अप्प दीपो भव भी हमें इसी ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता रहता है। विद्यार्थियों को अपनी पूरी क्षमता के साथ आत्मज्ञान को परिष्कृत करते हुए उज्ज्वल जीवन की कामना के साथ भारत की यशस्वी ज्ञान परंपरा को आत्मसात करते रहना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को जब आत्मज्ञान प्राप्त होगा तभी समस्त सृष्टि का उत्कृष्ट उत्थान होगा। बौद्ध अध्ययन केंद्र के विशेष कार्य अधिकारी एवं कार्यक्रम संयोजक प्रो. सुशील तिवारी ने कहा कि महात्मा गौतम बुद्ध सामाजिक जागरण के प्रभावी संत थे। उन्होंने अपने उपदेशों के माध्यम से व्यक्ति में चेतना जागृत करने का अनवरत यज्ञ किया। आत्म विश्वास ही मानव कल्याण का आधार है। बौद्ध धर्म दर्शन जीवन में यथार्थ की अनुभूति और उस अनुरूप अपना व्यवहार नियंत्रित करने की प्रेरणा देने वाला दर्शन है। कार्यक्रम में वित्त अधिकारी अजय सोनकर, डॉ. सत्येंद्र दुबे, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, डॉ. जय सिंह यादव, साकेत कुमार मिश्र, निवेदिता श्रीवास्तव एवं आशीष दुबे ने संबोधित किया। इस अवसर पर डॉ. विमल वर्मा, डॉ. सुनीता त्रिपाठी, डॉ. प्रज्ञेश नाथ त्रिपाठी, डॉ. संतोष कुमार सिंह, डॉ सच्चिदानंद चौबे, डॉ रविकांत शुक्ल, डॉ. यशवंत यादव, डॉ. नीरज कुमार सिंह, डॉ. सरिता सिंह व जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रताप सिंह आदि मौजूद रहे।

सिद्धार्थ विवि कपिलवस्तु में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव। विज्ञप्ति

गोष्ठी में उपस्थित शिक्षक। विज्ञप्ति

तथागत बुद्ध की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

सिद्धार्थनगर। बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर शहर के साड़ी तिराहे पर सोमवार को तथागत बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। विधायक श्यामधनी राही, पूर्व विधायक राघवेंद्र प्रताप सिंह एवं नगर पालिका परिषद के चेयरमैन श्याम बिहारी जायसवाल ने माल्यार्पण किया। इस मौके पर विकास पांडेय, विजय लोधी, डॉ. शक्ति जायसवाल, महेंद्र लोधी व आनंद मिश्रा मौजूद थे।

बौद्ध भिक्षुओं में फल वितरित

सिद्धार्थनगर। बुद्ध पूर्णिमा पर बसपा कार्यकर्ताओं ने सोमवार को बौध विहार अलीगढ़वा में बौद्ध भिक्षुओं में फल वितरित किया। इस दौरान जिलाध्यक्ष राजकुमार आर्या, पूर्व जिलाध्यक्ष पीआर आजाद, घनश्याम कुमार शर्मा, राम प्यारे, जितेंद्र, राज गोपाल भारती आदि मौजूद रहे। संवाद

दिनांक 21/5/22 आतंकवाद निरोधक दिवस के अवसर पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के मध्य 'आतंकवाद विरोध एवं राष्ट्रवाद 'विषय पर परिचर्चा करायी गयी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आतंकवाद निरोधक दिवस (21/05/2022)

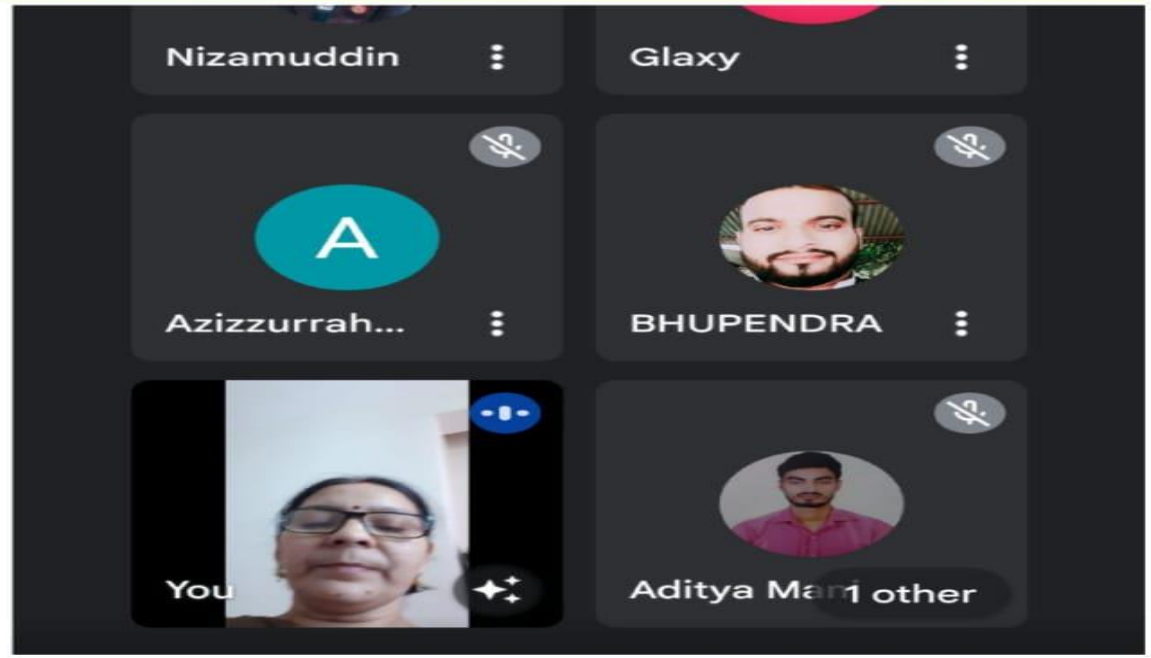

आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में दिनांक 28/5/22 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा महान क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर के जयन्ती के अवसर पर "क्रांतिकारी आन्दोलन के विकास में वीर सावरकर का योगदान " विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

स्वतंत्रता आंदोलन में वीर सावरकर का अतुलनीय योगदान

सिद्धार्थनगर (एसएनबी)। आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में सिद्धार्थ विश्वविधालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के इतिहास विभाग द्वारा द्वारा वीर सावरकर की जयंती के उपलक्ष्य में, क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास में वीर सावरकर का योगदान, विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास में वीर सावरकर के योगदान, विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन

कार्यक्रम में वीर सावरकर के बलिदान और अदम्य राष्ट्र प्रेम की गौरव गाथा का उल्लेख करते हुए संस्कृत विभाग के डा. धर्मेन्द् कुमार ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में वीर सावरकर का अतुलनीय योगदान है, भारतीय इतिहास मैं वीर सावरकर को यदि उचित स्थान दिया गया होता, तो आज वीर सावरकर भारतीय युवाओं के आईकान होते। उन्होंने त्याग और बलिदान के क्षेत्र में जो उच्च शिखर प्राप्त किया है, वह आज भी भारतीय स्वतंत्र आंदोलन में त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति है। मुख्य अतिथि डा. जय सिंह यादव, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव के क्रम में वीर सावरकर के जन्मदिवस मनाने का उद्देश्य केवल उस समय की परिस्थितियों को याद नहीं करना है, बल्कि शहीदों की याद में हमें सदैव अपने व समाज के दायित्व, कर्तव्य, मूल्य को जानने एवं समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विषम परिस्थितियों में वीर सावरकर ने स्वतंत्रता किस प्रकार से प्राप्त होगी। इस पर विचार व्यक्त करते हुए अपने प्राणों की आहुति प्रदान कर राष्ट्र रक्षा का संकल्प पूरा किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता की भूमिका का निर्वहन करते हुए डा. सच्चिदानन्द चौबे, अध्यक्ष, इतिहास विभाग एवं समन्वयक, दीन दयाल उपाध्याय, शोध पीठ, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जाना केवल इस कारण से ही प्रासंगिक नहीं है कि यह हमें उस समय की दशा व हालात से अवगत कराता है, बल्कि आज के समय में कैसे अपने राष्ट्र हित की रक्षा एवं उत्थान पर विचार किया जाना सुनिश्चित हो, इस पर भी ध्यान आकृष्ट करता है। उन्होंने कहा कि वीर सावरकर को याद करना एवं उन्हें प्रणाम करना किसी भी रुप में देश के समस्त नागरिकों का कर्तव्य है। यदि कोई भी नागरिक उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित नहीं करता है, तो यह उसकी खोखली मानसिकता का द्योतक है, न कि बौद्धिक क्षमता का कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डा. अखिलेश कुमार दीक्षित अध्यक्ष, बीबीए विभाग ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव के क्रम में वीर सावरकर का जन्म दिवस मनाने का संकल्प हमारी सरकार का एक अनोखा व अविस्मरणीय कार्यक्रम है। जिसमें हम उन वीर जवानों व शहीदों को नमन करते हुए उन्हें याद कर रहे हैं। जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति प्रदान कर देश की मान, सम्मान की रक्षा किया, उनकी कुर्बानी हमें सदैव याद रखना होगा, जिससे हमारा देश व राष्ट्र अक्षुण्ण बना रहे और प्रत्येक जनमानस के पटल पर एक सारग्रभित छाप छोड़ने का कार्य करे। कार्यक्रम का संचालन डा. यशवन्त यादव ने किया। इस अवसर पर डा. मयंक कुमार कुशवाहा, छात्र अनुज उपाध्याय, रीमा जायसवाल, संघमित्रा राव, साधना कसौधन, स्नेहलता पाण्डेय, तथा विश्व विद्यालय के विभिन्न विभागों के कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

ट में खुला अवैध खनन प्रभारी ने प्रशासन को भेजी रिपोर्ट में

वीर सावरकर ने बलिदान के क्षेत्र में प्राप्त किया उच्च शिखर

जासं, सिद्धार्थनगर : सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में शनिवार को इतिहास विभाग की ओर से वीर सावरकर जयंती पर व्याख्यान का आयोजन हुआ। क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में वीर सावरकर के योगदान विषय पर सभी ने अपने विचार रखे। इनके जीवन पर प्रकाश डाला। संस्कृत विभाग के डा. धर्मेंद्र कुमार ने कहा स्वतंत्रता आंदोलन में वीर सावरकर का अतुलनीय योगदान है। उन्होंने त्याग और बलिदान के क्षेत्र में जो उच्च शिखर प्राप्त किया। हिंदी विभाग के डा. जयसिंह यादव ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव के क्रम में वीर सावरकर के जयंती मनाने का उद्देश्य समाज के दायित्व, कर्तव्य मूल्य को जानने व समझना है। विषम परिस्थितियों में वीर सावरकर ने स्वतंत्रता संग्राम में प्राणों की आहुति देकर राष्ट्र रक्षा का संकल्प पूरा किया। इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा. सच्चिदानंद चौबे ने कहा आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जाना केवल इस लिए प्रासंगिक नहीं है कि यह हमें उस समय की दशा व हालात से अवगत कराता है। राष्ट्र हित की रक्षा व उत्थान पर विचार करना सुनिश्चित होगा। वीर सावरकर को नमन करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। वह वर्ष 1857 के आंदोलन को प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन कहने वाले प्रथम राष्ट्रवादी चिंतक रहे। इन्हें दो बार आजीवन कारावास की सजा दी गई। वह वास्तव में भारत रत्न थे और रहेंगे। बीबीए विभाग के अध्यक्ष डा. अखिलेश कुमार दीक्षित ने कहा कि वीर सावरकर की जयंती मनाने का संकल्प सरकार का सराहनीय कार्यक्रम है। संचालन इतिहास विभाग के डा. यशवंत यादव व समाजशास्त्र विभाग के डा. मयंक कुमार कुशवाहा ने किया। छात्र अनुज उपाध्याय, रीमा, संघमित्रा राव, साधना कसौधन, स्नेहलता आदि मौजूद रहे।

वीर सावरकर को इतिहास में नहीं मिला उचित स्थान

शनिवार को सिद्धार्थ विवि कपिलवस्तु में आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में बोलते वक्ता व कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक।

सिद्धार्थनगर, निज संवाददाता। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत शनिवार को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में वीर सावरकर की जयंती के उपलक्ष्य में क्रांतिकारी आंदोलन के विकास में वीर सावरकर का योगदान विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम हुआ।

संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. धर्मेंद्र कुमार ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में वीर सावरकर का अतुलनीय योगदान है। भारतीय इतिहास में वीर सावरकर को यदि उचित स्थान दिया गया होता तो आज सावरकर भारतीय युवाओं के आईकान होते। इस मौके पर सहायक आचार्य हिंदी विभाग डॉ.जय सिंह यादव, समन्वयक दीन दयाल उपाध्याय शोध पीठ के डॉ. सच्चिदानन्द चौब, डॉ. यशवंत यादव, डॉ.मयंक कुमार कुशवाहा आदि मौजूद रहीं।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर के जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर दिनांक 31/5/22 को अनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

तंबाकू से अर्थव्यवस्था और पर्यावरण को पहुंचती है क्षति

विश्व तंबाकू दिवस के मौके पर आयोजित किए गए कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

विश्व तंबाकू निषेध दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. सलिल श्रीवास्तव, सीएमओ डॉ. एके चौधरी व अन्य डॉक्टर। विज्ञप्ति

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के जंतु विज्ञान विभाग में विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर मंगलववार को आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी में कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा कि तंबाकू न केवल इस्तेमाल करने वाले को प्रत्यक्ष नुकसान पहुंचाता है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, महिला स्वास्थ्य व बाल श्रम पर कहीं ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

कुलपति ने कहा कि तंबाकू का सेवन करने वाले लोगों को इसके नुकसान को समझना चाहिए। जो एक बार मुंह के कैंसर की चपेट में आ जाता है, उसे अनेक प्रकार की तकलीफ का सामना करना पड़ता है। संजय गाधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एसजीपीजीआई) लखनऊ के डॉ. आलोक कुमार ने तंबाकू के उत्पादन, उपभोग व इससे होने वाले नुकसान के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि तंबाकू का उपभोग न केवल व्यक्ति को तंबाकू जनित रोगों से प्रभावित करता है, बल्कि वे तमाम जटिल बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं, अर्थात ऐसे लोग कोविड, हार्ट अटैक आदि जैसी बीमारियों की चपेट में आसानी से आ जाते हैं। दंत चिकित्सक डॉ. जितेंद्र शर्मा ने तंबाकू से स्वास्थ्य पर होने वाले प्रतिकूल प्रभावों व विभिन्न प्रकार के कैंसर के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. शर्मा के अनुसार, तंबाकू से लगभग 20 से अधिक प्रकार के कैंसर होते हैं। गणित विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. प्रकृति राय, जंतु विज्ञान विभाग के डॉ. आशीष श्रीवास्तव तथा डॉ. विनीता रावत, एमआईटी कॉलेज ऑफ फार्मेसी, मुरादाबाद के निदेशक प्रो. शुभ्रांशु बी पांडा ने विचार व्यक्त किए।

शौकिया न करें छात्र-छात्राएं: सीएमओ : माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज के मेडिकल छात्र-छात्राओं ने सोमवार को विश्व तंबाकू निषेध दिवस के मौके पर किसी भी प्रकार से तंबाकू का सेवन नहीं करने की शपथ ली।

मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सलिल श्रीवास्तव ने छात्र-छात्राओं को शपथ दिलाई। सीएमओ डॉ. एके चौधरी ने कहा कि शौकिया तंबाकू का सेवन नहीं करना चाहिए। कोई भी मित्र आपको नशा के लिए प्रेरित करता है तो उसके नुकसान के बारे में जरूर सोच लें। इस मौके पर प्रो. वेद प्रकाश ने डॉ. रंजन दीक्षित, डॉ. अजमल एवं प्रत्युष दुबे आदि मौजूद थे।

तंबाकू छोड़ने के लिए लोगों को किया प्रेरित

परसा। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर मंगलवार को एक संस्था के तत्वावधान में बढ़नी कस्बे में संस्था के सदस्य अफरोज आलम के नेतृत्व में नागरिकों एवं टैंपो, रिक्शा चालकों, बसों में यात्रियों, दुकानदारों को तंबाकू से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी। तंबाकू निषेध से संबंधित पंफलेट देकर जागरूक किया गया। इस दौरान सलीम अहमद, मोहम्मद अली, रियाज, मनोज, रवि विश्वकर्मा, रिंकू, जावेद, बरकत, शाहिद, समीम आदि मौजूद रहे। संवाद

तंबाकू, सिगरेट के सेवन से होती है जानलेवा बीमारी

डुमरियागंज। धूम्रपान निषेध दिवस के अवसर पर मंगलवार को एक सामाजिक संगठन के तत्वावधान में तहसील क्षेत्र के हल्लौर गांव के विभिन्न मुहल्लों व मुख्य बाजार में जन जागरण अभियान चलाया गया। सभी को तंबाकू से होने वाली बीमारियों के बारे में बताया गया। पान मसाला और सिगरेट का सेवन न करने के लिए शपथ दिलाई गई। सामाजिक कार्यकर्ता राहिब रिजवी ने बताया कि विगत सात साल में तंबाकू से होने वाली मौतों की संख्या तीन लाख पचास हजार हो गई है। 2017 में तंबाकू के कारण हुए कैंसर से 90 हजार से अधिक की मौत हुई थी। तंबाकू चबाने और थूकने वालों से कोरोना फैलने का भी खतरा है। इस लिए तंबाकू का सेवन न करें। इस दौरान हसन जमाल, राजू, कुमैल, शकील अहमद, इकबाल, संतोष, असगर, फैजी, आसिफ, विवेक कुमार आदि मौजूद रहे। संवाद

सिद्धार्थ विव0 में आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी

यूथ इण्डिया संवाददाता,

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर में जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा मंगलवार को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी विश्वविद्यालय के

कुलपति प्रो0 एच. बी. श्रीवास्तव के निर्देश में संपन्न हुई, तथा इसका मार्गदर्शन प्रो0 प्रकृति राय ने किया। इस वर्ष विश्व तम्बाकू निषेध दिवस का विषय था पर्यावरण संरक्षण, इस अवसर पर विषय विशेषज्ञों द्वारा इस विषय पर प्रकाश डाला गया। विशेषज्ञों के अनुसार तम्बाकू न केवल उपभोग करने वाले को प्रत्यक्ष नुकसान पहुँचाता है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, महिला स्वास्थ्य व बाल श्रम पर कहीं ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

इस संगोष्ठी का आयोजन जंतु विज्ञान विभाग के डॉ0 आशीष श्रीवास्तव तथा डॉ0 विनीता रावत द्वारा

किया गया। आयोजन के प्रारम्भ में संजय गाधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एसजीपीजीआई) लखनऊ के डॉ0 आलोक कुमार ने तम्बाकू के उत्पादन, उपभोग व इससे होने वाले नुकसान के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। डॉ0 आलोक के अनुसार, तम्बाकू का उपभोग न केवल व्यक्ति को तम्बाकू जनित रोगों से प्रभावित करता है बल्कि वे तमाम जटिल बीमारियों के प्रति अधिक संवदनशील हो जाते हैं, अर्थात ऐसे लोग कोविड, हार्ट अटैक आदि जैसी बीमारियों के चपेट में आसानी से आ जाते हैं।

तत्पश्चात वाराणसी कैंटोमेंट जनरल हॉस्पिटल के सीनियर दंत चिकित्सक डॉ0 जितेन्द्र शर्मा ने तम्बाकू से स्वास्थ्य पर होने वाले प्रतिकूल प्रभावों व विभिन्न प्रकार के कैंसर के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ0 शर्मा के अनुसार तंबाकू से लगभग 20 से अधिक प्रकार के कैंसर होते हैं और इससे हर साल पूरे विश्व में प्रत्यक्ष रूप से लगभग 80 लाख लोगों की मौत होती है। जो लोग धूम्रपान नहीं करते हैं वे लोग भी धूम्रपान करने वाले लोगों से प्रभावित होते हैं तथा इस प्रकार लगभग 12 लाख लोग तम्बाकू की चपेट में आ जाते हैं।

एमआईटी कॉलेज ऑफ फार्मेसी, मुरादाबाद के निदेशक प्रो0 शुभ्रांशु बी0 पांडा कार्यक्रम के तीसरे वक्ता थे। उन्होंने तम्बाकू के उद्योग व तम्बाकू उत्पादन से होने वाली हानियों पर चर्चा की। प्रो0 पांडा के अनुसार, सिर्फ दिवस मनाने से या कानून मौजूद होने से इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता जब तक कि इसके उपभोक्ता इसके उपभोग को हतोत्साहित नहीं करते।

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आनलाइन संगोष्ठी

कपिलवस्तु (एसएनबी)। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर में जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा मंगलवार को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर एक आनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एचबी श्रीवास्तव के निर्देश में संपन्न हुई तथा इसका मार्गदर्शन प्रो. प्रति राय ने किया। इस वर्ष विश्व तम्बाकू निषेध दिवस का विषय था पर्यावरण संरक्षण। इस संगोष्ठी का आयोजन जंतु विज्ञान विभाग के डा. आशीष श्रीवास्तव तथा डा. विनीता रावत द्वारा किया गया। आयोजन के प्रारम्भ में संजय गाधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट अफ मेडिकल साइंसेज (एसजीपीजीआई) लखनऊ के डा. आलोक कुमार ने तम्बाकू के उत्पादन, उपभोग व इससे होने वाले नुकसान के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। डा. आलोक के अनुसार, तम्बाकू का उपभोग न केवल व्यक्ति को तम्बाकू जनित रोगों से प्रभावित करता है, बल्कि वे तमाम जटिल बीमारियों के प्रति अधिक संवदनशील हो जाते हैं। तत्पश्चात वाराणसी कैंटोमेंट जनरल हास्पिटल के सीनियर दंत चिकित्सक डा. जितेन्द्र शर्मा ने तम्बाकू से स्वास्थ्य पर होने वाले प्रतिकूल प्रभावों व विभिन्न प्रकार के कैंसर के बारे में जानकारी प्रदान की। एमआईटी कालेज आफ फार्मेसी मुरादाबाद के निदेशक प्रो. शुभ्रांशु बी. पांडा कार्यक्रम के तीसरे वक्ता थे। प्रो. पांडा के अनुसार, सिर्फ दिवस मनाने से या कानून मौजूद होने से इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। जब तक कि इसके उपभोक्ता इसके उपभोग को हतोत्साहित नहीं करते।

आजादी का अमृत महोत्सव
कार्यक्रम/ गतिविधियां
रिपोर्ट - मई 2022

द्वारा -
डॉ . सुनीता त्रिपाठी
नोडल अधिकारी
आजादी का अमृत महोत्सव
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु